जिंदल विद्या मंदिर,विनायकवाडी
शैक्षिक वर्ष २०१७ १८
छुट्टियों के लिए कार्यपत्र
कक्षा : ७वी

सूचना : कार्यपत्र के प्रश्नों के उत्तर कापी में सुंदर हस्ताक्षर में लिखिए |
कार्यपत्र को कापी में चिपकाना है |

प्रश्न.१ निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए |

तद्भव शब्द : जीभ, ताँबा, तिनका, दस, नींद ,नाच ,घडा, पाँच, पीठ, बहन, भौंरा, मीत, मिट्ठी, शक्कर, गँवार, भिखारी, ऊँचा, अँधेरा |

प्रश्न.२) निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह कर उनके भेद लिखिए |

१.प्रत्येक २.यथाशक्ति ३.अनजान ४.आजीवन ५.आजन्म ६.मंत्रालय
७.रामभक्त ८.आपबीती ९.सिरदर्द १०.गुणहीन ११.सेनाध्यक्ष १२.जेबकतरा
१३.पंचवटी १४.त्रिकोण १५.नवग्रह १६.चौमास

प्रश्न.३) दिए गए वाक्यों में निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए |

१. मैं नहीं चलता |(भाववाच्य में बदलिए)
२. प्रवीण गाना गाता हैं |(कर्मवाच्य में बदलिए)
३.आभा ने पुस्तक पढी | (कर्मवाच्य में बदलिए)
४. बच्चा नहीं सोता | (भाववाच्य में बदलिए)
५. राम के द्वारा गाना गाया जाता है |(कर्तृवाच्य में बदलिए)
६. धोबी से कपडे नहीं धोए जाते |(कर्तृवाच्य में बदलिए)
७. सिरदर्द के कारण वह सो नहीं सका |(भाववाच्य में बदलिए)
८. पुलिस जेबकतरों को पकडती हैं | (कर्मवाच्य में बदलिए)
९. गीता से खाना नहीं बनाया जाता |(कर्तृवाच्य में बदलिए)
१०. रोगी उठ नहीं सकता |(भाववाच्य में बदलिए)

प्रश्न.४) निम्नलिखित पंक्तियों में से अंलकार शब्द छाँटकर लिखिए तथा उनके भेद लिखिए |

१. उधौ जोग जोग हम नाहीं |
२. भूरी भूरी भेदभाव भूमि से भगा दिया |

३. जन रंजन मंजन दनुज मनुज रुप सुर भूप |

४. सजना है मुझे सजना के लिए |

५. त्यों रसखानि वही रसखानि जु है रसखानि सो है रसखानि |

प्रश्न.५) निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए |

१. क्या मोहन घर चला गया है ? (विधानार्थक)

२. शायद वह आ जाए |(निषेधार्थक)

३.अच्छे अध्यापकों के कारण ही छात्र प्रथम आते हैं |(संकेतार्थक)

४. उसे समझ आ जाएगा |(संदेहार्थक)

५. राम सबको जानता है |(निषेधार्थक)

६. वह बहुत खुश है |(प्रश्नार्थक)

प्रश्न.६) निम्नलिखित वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय छाँटकर लिखिए |

१. माँ ने अपने बच्चों के लिए भोजन बनाया |

२. हम सब ईश्वर का धन्यवाद करें |

३. मोर पंख फैलाकर नाच रहा है |

४. दिल्ली भारत की राजधानी है |

५. प्लास्टिक का उपयोग नहीं करना चाहिए |

६. रंजना सितार बना रही है |

८. ग्रामीण लोग बहुत सरल तथा परिश्रमी होते हैं |

प्रश्न.७) गुरू द्रोणाचार्य अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी मानते थे | वे सोचने लगे कि यह तो अर्जुन से भी अधिक श्रेष्ठ लगता है | अत: उन्होंने एकलव्य से कहा-"अगर तुमने मुझे अपना गुरू माना है तो मुझे गुरू-दक्षिणा भी दो |"एकलव्य प्रसन्नतापूर्वक बोला-"गुरूजी,मुझे आज्ञा दीजिए | आपको गुर्रू दक्षिणा में क्या चाहिए?मेरा सबकुछ आपको समर्पित है |"द्रोणाचार्य ने कहा -"मुझे दक्षिणा में तुम्हारे दाएँ हाथ का अँगूठा चाहिए |" यह सुनते ही एकलव्य ने अपने दाएँ हाथ का अँगूठा काटकर गुरू द्रोणाचार्य को समर्पित कर दिया |

जब गुरू द्रोणाचार्य ने एकलव्य से अँगूठा माँगा था , लेकिन एकलव्य ने नही दिया होता तो आगे क्या हो सकता था ? अनुमान लगाकर ५ से ६ वाक्य में लिखिए |